शुष्क क्षेत्र के किसानों के लिए मेहंदी को बहुवर्षीय फसल के रूप में अपनाने की पहल

नवाचार: कम पानी में लंबी कमाई, अब बीकानेर में 'मरु हिना' तैयार

पत्रिका
अतुल आचार्य
patrika.com

बीकानेर. पश्चिमी राजस्थान में खेती के सामने पानी सबसे बड़ी चुनौती है, लेकिन इसी चुनौती के बीच कृषि वैज्ञानिकों ने ऐसी फसल को बढ़ावा देने की पहल की है, जो कम पानी में लंबे समय तक उत्पादन दे सकती है। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय ने मेहंदी से तैयार उत्पाद को 'मरु हिना' नाम देकर किसानों के सामने नवाचार के रूप में प्रस्तुत किया है। विश्वविद्यालय के अनुसार शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों में मेहंदी को बहुवर्षीय फसल के रूप में अपनाया जा सकता है। रोपण के तीन-चार साल बाद फसल पूरी उत्पादन क्षमता पर आती है और उचित प्रबंधन के साथ करीब 20 से 30 साल तक उत्पादन दे सकती है।

15 से 20 क्विंटल तक सूखी पत्तियां

अनुसंधान निदेशक डॉ. एनके शर्मा के अनुसार सामान्य वर्षा की स्थिति में अच्छी तरह प्रबंधित मेहंदी की फसल से प्रतिवर्ष करीब 15 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सूखी पत्तियों का उत्पादन लिया जा सकता है। कम पानी की जरूरत और लंबे समय तक उत्पादन देने की क्षमता के कारण इसे शुष्क क्षेत्र में टिकाऊ खेती के विकल्पों में शामिल किया जा सकता है। मेहंदी प्राकृतिक रंग का प्रमुख स्रोत होने के साथ औषधीय उपयोग के लिए भी जानी जाती है। इसे खेत की सीमा पर हेज के रूप में भी लगाया जा सकता है। ऐसे में विश्वविद्यालय का प्रयोग मेहंदी को केवल फसल के रूप में नहीं, बल्कि कृषि उद्यमिता से जोड़कर देखने की दिशा में है।

खेत की हेज से तैयार हुआ 'मरु हिना'

विश्वविद्यालय परिसर में हेज के रूप में लगाए गए मेहंदी के पौधों से विद्यार्थियों ने 'मरु हिना' उत्पाद तैयार किया। कृषि महाविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. शंकर लाल के अनुसार, अनुभवात्मक प्रशिक्षण के तहत विद्यार्थियों ने पौधों की देखभाल से लेकर कटाई, सुखाने, पत्तियां अलग करने, पिसाई और पैकेजिंग तक की प्रक्रिया में हिस्सा लिया। कटाई के बाद मेहंदी को 18 से 20 घंटे तक खुले में सुखाया गया। इसके बाद पत्तियों को डंडे से झाड़कर अलग किया गया और उन्हें पीसकर शुद्ध मेहंदी की पैकेजिंग तैयार की गई।

सोजत से बीकानेर तक मेहंदी की नई संभावना

पाली का सोजत और मारवाड़ जंक्शन क्षेत्र लंबे समय से व्यावसायिक मेहंदी उत्पादन के लिए जाना जाता है। यहां करीब 40 हजार हेक्टेयर में मेहंदी की खेती होती है। पत्तियों से पाउडर तैयार करने और पैकेजिंग से जुड़े कामों से भी बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिलता है। इसी व्यावसायिक संभावना को देखते हुए विश्वविद्यालय पश्चिमी राजस्थान के किसानों के लिए मेहंदी को वैकल्पिक फसल के रूप में देखने की संभावना तलाश रहा है। कृषि महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए भी यह प्रयोग कृषि उद्यमिता का व्यावहारिक मॉडल बन रहा है।

इनका कहना है

यह नवाचार किसानों के लिए मेहंदी की खेती और उससे जुड़े उत्पाद तैयार करने की संभावनाओं को सामने लाता है।

- प्रो. राजेंद्र बाबू दुबे, कुलगुरु

मेहंदी क्यों खास

- **फसल का स्वरूप:** बहुवर्षीय
- **पूरी उत्पादन क्षमता:** रोपण के 3-4 साल बाद
- **उत्पादन अवधि:** करीब 20-30 साल
- **सूखी पत्तियों का संभावित उत्पादन:** 15-20 क्विंटल/हेक्टेयर/वर्ष
- **मुख्य उपयोग:** प्राकृतिक रंग, सौंदर्य प्रसाधन और औषधीय उपयोग
- **एक अतिरिक्त उपयोग:** खेत की सीमा पर हेज के रूप में रोपण

विद्यार्थियों ने लिया नशा मुक्त समाज के निर्माण का संकल्प

बीकानेर @ पत्रिका. एसकेआरएयू के छात्र कल्याण निदेशालय की ओर से कृषि महाविद्यालय में गुरुवार को नशा मुक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय एवं कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं एनएसएस स्वयंसेवकों ने भाग लिया। निदेशक छात्र कल्याण डॉ. एचएल देशवाल ने विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभाव एवं बचाव के बारे में जानकारी दी तथा नशा मुक्त समाज के निर्माण में विद्यार्थियों को सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. विजय प्रकाश ने कहा कि नशा मुक्त समाज की प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। युवाओं को इसके लिए प्रोएक्टिव होकर अपनी सकारात्मक भूमिका निभानी होगी। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. दीपाली धवन ने कहा कि नशा देश के भविष्य को संकट में डाल सकता है।

एसकेआरएयू- विद्यार्थियों ने लिया नशा मुक्त समाज के निर्माण का संकल्प

बीकानेर। एसकेआरएयू के छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा कृषि महाविद्यालय, बीकानेर में गुरुवार को नशा मुक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय एवं कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं एनएसएस स्वयंसेवकों ने भाग लिया। निदेशक छात्र कल्याण डॉ एच एल देशवाल ने विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभाव एवं बचाव के बारे में जानकारी दी तथा नशा मुक्त समाज के निर्माण में विद्यार्थियों को सक्रिय भूमिका निभाने का आव्हान किया। कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. विजय प्रकाश ने कहा कि नशा मुक्त समाज की प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। युवाओं को इसके लिए प्रोएक्टिव होकर अपनी सकारात्मक भूमिका निभानी होगी। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. दीपाली धवन, ने कहा कि नशा देश के भविष्य को संकट में डाल सकता है। विद्यार्थी स्वयं नशे से बचें तथा दूसरों को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करें। अधिष्ठाता स्नातकोत्तर डॉ. राजेश कुमार वर्मा, ने विद्यार्थियों एवं एनएसएस स्वयंसेवकों को नशा मुक्ति की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में डॉ. अशोक कुमार, डॉ अरविन्द झाझडिया, डॉ. विवेक व्यास, डॉ. ममता सिंह, डॉ. कुलदीप शिंदे, डॉ. रूपेश मीना एवं डॉ. रामेश्वर जांगू सहित कृषि विश्विद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम संचालन डॉ. शंकर लाल द्वारा किया गया। डॉ. चंद्र प्रकाश मीणा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

एसकेआरएयू में नशा मुक्ति कार्यक्रम, विद्यार्थियों ने ली शपथ

बीकानेर| स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय की ओर से कृषि महाविद्यालय, बीकानेर में नशा मुक्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कृषि महाविद्यालय, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय और कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान के शिक्षक, कर्मचारी तथा एनएसएस स्वयंसेवक शामिल हुए। निदेशक छात्र कल्याण एच एल देशवाल ने विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभाव, उससे बचाव और जागरूकता के तरीकों पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि नशा मुक्त समाज के निर्माण में युवाओं की सक्रिय भूमिका निर्णायक है। महाविद्यालय के अधिष्ठाता विजय प्रकाश ने बताया कि नशा मुक्त समाज ही विकास के रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ सकता है और इसके लिए युवाओं को सक्रिय होकर सकारात्मक पहल करनी होगी। प्रसार शिक्षा निदेशक दीपाली धवन ने चेताया कि नशा देश के भविष्य को संकट में डाल सकता है। अधिष्ठाता स्नातकोत्तर राजेश कुमार वर्मा ने विद्यार्थियों और एनएसएस स्वयंसेवकों को नशा मुक्ति की शपथ दिलाई।